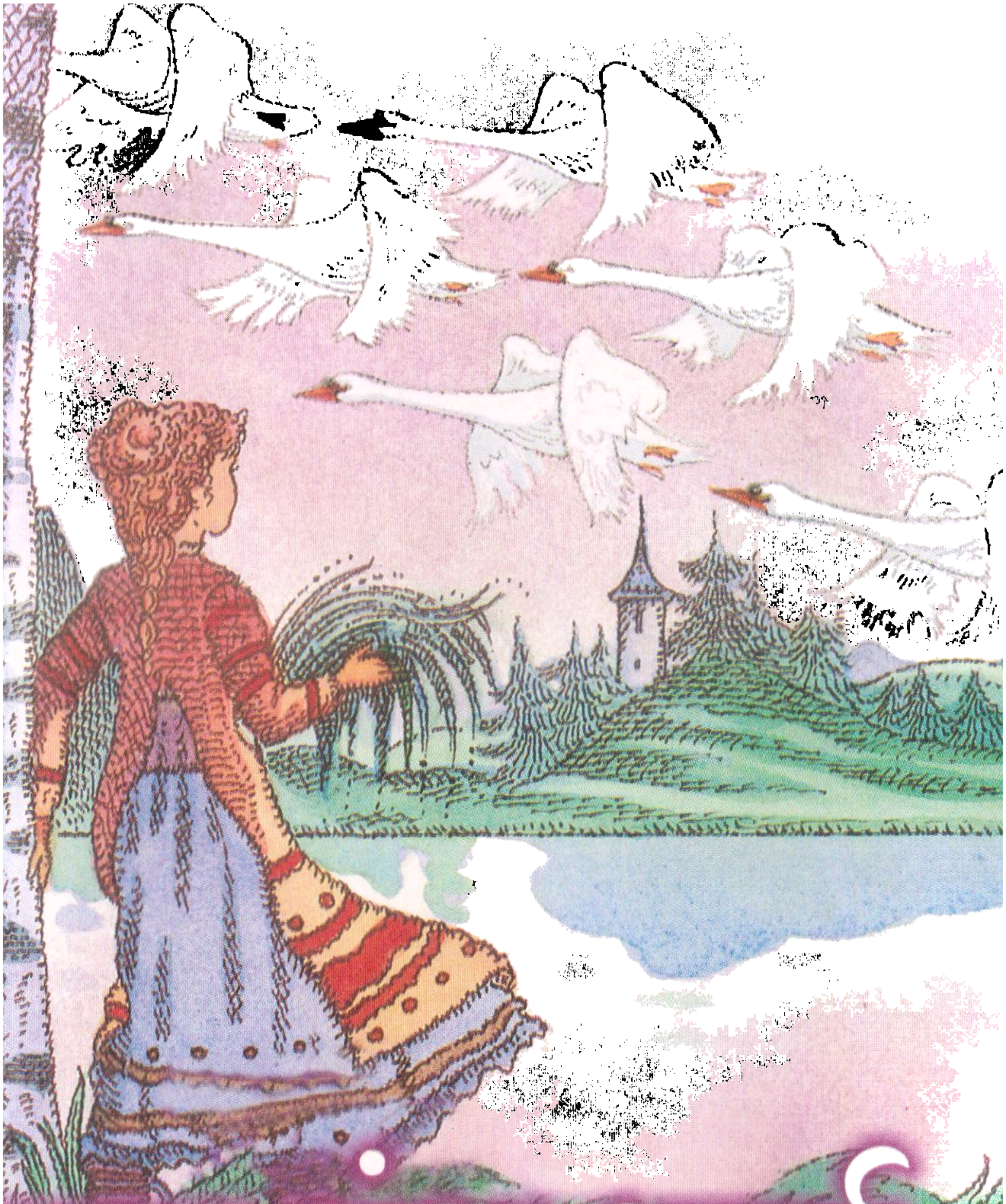


छह हंस भाई

छह हंस भाई

पुनर्कथन

एडेल गिरास

अनुवाद

मोहिनी राव

चित्रांकन

इयान बेक

स्कॉलास्टिक

न्यूयार्क टोरंटो लंदन ऑकलैण्ड सिडनी

मेक्सिको सिटी नई दिल्ली हांगकांग ब्यूनस आयर्स

पहला हिंदी संस्करण : सितंबर 2002

स्कॉलास्टिक इंडिया प्रा. लिमिटेड
29 उद्योग विहार, फेज़-I, गुड़गाँव-122016
द्वारा प्रकाशित।

स्कॉलास्टिक इंडिया भारत में स्कॉलास्टिक कार्पोरेशन की उप-संस्था है।
भारत के अतिरिक्त कॅनडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, यूनाइटेड किंगडम, मेक्सिको,
हांगकांग और अर्जेंटीना में भी स्कॉलास्टिक कार्पोरेशन की उप-संस्थाएँ हैं।

ISBN: 81-7655-141-4

मूल्यः 50 रुपये



बहुत समय पहले की बात है। एक राजा था। उसके छह बेटे और कोरा नाम की एक बेटी थी। वे झील के किनारे एक महल में रहते थे। वे आपस में एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे। जिस दिन कोरा का जन्म हुआ, उसी दिन उसकी माँ मर गयी। राजा और उसके बेटे बहुत दिनों तक उसका शोक मनाते रहे। बाद में जब कोरा बड़ी हुई तो महल में हँसी वापस आयी। हँसी-खुशी में दिन बहुत अच्छे बीत रहे

थे, मानो किसी माला के मोती, खुशी से चमक रहे हों।



फिर एक दिन, राजा शिकार खेलने जंगल में गया। उसके आदमी उसके साथ गये। लेकिन जल्दी ही राजा ने उन्हें बहुत पीछे छोड़ दिया। उसको एक जंगली सूअर दिखायी दे गया और उसका पीछा करते-करते वह एक बहुत घने जंगल में पहुँच गया। वहाँ पेड़ इतने पास-पास थे कि उनकी शाखाएँ ऊपर की ओर एक-दूसरे से जुड़ गयी थीं और एक बड़ी-सी

छतरी-सी बन गयी थी जो सूरज की रोशनी को नीचे पहुँचने से रोकती थी। अचानक राजा एक खुली जगह में पहुँचा, पर जंगली सूअर का नामोनिशान भी नहीं था। वह समझ गया कि वह भटक गया है। उसने अपने आदमियों को पुकारा, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। अचानक पेड़ों की अँधेरी क़तारों के बीच में से एक औरत बाहर निकली। राजा फ़ौरन समझ गया कि वह कोई डायन है, क्योंकि उसका सिर बराबर हिल रहा था। उसकी पीली आँखें कमज़ोर-सी थीं और किनारों पर लाल थीं।

"नमस्ते, माताजी!" दृढ़ स्वर में राजा ने कहा। "क्या आप मुझे मेरे घर का रास्ता बतायेंगी? लगता है कि मैं भटक गया हूँ।"

"मेरे पास तुम्हें सीधे रास्ते पर पहुँचाने की

शक्ति है,'' उस औरत ने फुसफुसा कर कहा। उसकी आवाज़ ज़ंग-लगे उस्तरे जैसी थी। ''लेकिन उसके बदले तुम्हें मेरे लिए कुछ करना होगा, वरना मैं तुम्हें यहाँ अकेला छोड़ दूँगी और तुम जल्दी ही हड्डियों का एक ढाँचा बन कर रह जाओगे।''

''मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ,'' राजा ने कहा। और कहता भी तो क्या?



वह डायन के साथ उसके घर तक गया। उसने वहाँ आग के सामने एक सुन्दर युवती को बैठे देखा।

“यह मेरी बेटी है,” डायन ने मुस्कुराने के लिए अपना मुँह सिकोड़ा। “मेरी शर्त यह है कि तुम इससे शादी कर के इसे अपनी रानी बनाओ।”

“मुझे खुशी होगी,” राजा ने कहा। उसने युवती का हाथ पकड़ कर उसे उठाया और उसे अपने घोड़े पर बिठा लिया। उसकी उँगलियों को छूते ही राजा का मन न जाने क्यों नफ़रत से भर गया। ‘यह सुन्दर है,’ घोड़े पर जाते हुए राजा ने मन-ही-मन कहा, ‘मुझे तो खुश होना चाहिए। लेकिन, इसकी आँखें मानो बर्फ़ की बनी हैं। उनमें अँधेरा-सा भी है और उसके लाल होठ ज़हर से रंगे जान पड़ते हैं।’ उसने निश्चय किया कि उसे अपने बच्चों के बारे में कुछ पता नहीं चलने देगा, क्योंकि उसको विश्वास था कि अगर वह उन्हें नुक़सान पहुँचा सकती है तो

ज़रूर पहुँचायेगी। इसलिए वह डायन की बेटी को महल के पास ही एक मकान में ले गया। उससे बोला, "विवाह का सारा इंतज़ाम हो जाने तक तुम यहीं रहोगी। हर काम बढ़िया होना चाहिए। कहीं कोई कमी नहीं रहनी चाहिए।" लड़की खुश हो गयी।



उसी रात को राजा अपने बच्चों को दूसरे महल में ले गया जो हरे-भरे घने जंगल के बीच ऐसे छिपा हुआ था कि किसी की मदद के बिना वह खुद भी उसे ढूँढ़

नहीं पाता। उसके हाथ में जादुई धागे का एक गोला था जो किसी ज्ञानी स्त्री ने उसको दिया था। उस गोले को ज़मीन पर ज़रा दूर तक खोल कर फेंकने पर वह अपने-आप खुलता जाता और रास्ता दिखाता जाता।

राजा के छह बेटे और बेटी कोरा वहाँ रहने लगे। उधर जब राजा और रानी अपने विवाह का उत्सव मना रहे थे तो वे वहाँ छिपे हुए, सुरक्षित थे। शादी के बाद नई रानी ने देखा कि राजा हर रोज़ बहुत देर तक महल से कहीं बाहर रहता है। उसको शक हो गया।

उसने मन-ही-मन सोचा, 'वह मुझसे कुछ छिपा रहा है। चाहे जो हो, मैं पता लगा कर ही छोडूँगी।'

उसने अस्तबल में काम करनेवालों को बुला कर

बहुत धीरे से कहा, "मेरे पति हर रोज़ कहीं चले जाते हैं। पता लगा कर मुझे बताओ कि वह कहाँ जाते हैं?" उसकी आवाज़ चाश्नी जैसी मीठी लग रही थी। "तुम मेरा काम कर दो तो मैं तुम्हें इनाम में सोने के सिक्के दूँगी—इतने कि तुम गिन भी नहीं सकोगे।"

और सोने में तो वह ताक़त है कि किसी को भी झुका सकती है—मज़बूत-से-मज़बूत आदमी को भी। अस्तबल के नौकरों ने उसे जादुई धागे के बारे में बताया। और यह भी कि वह क्या कुछ कर सकता है। एक दिन, जब राजा किसी पड़ोसी राज्य में गया था, डायन की बेटी ख़ज़ाने में जा पहुँची। वहाँ उसे वह गोला मिल गया जिसकी उसे तलाश थी। उसने उसे अपनी जेब में डाल लिया।

रूपहला गोला खुलता गया और पेड़ों के बीच में



से लुढ़कता गया। आख़िर वह उस महल तक पहुँच गयी जिसमें राजा के बच्चे छिपे थे। वह वहाँ पहुँची तो सूरज डूब रहा था। उसने देखा कि छह सुन्दर नौजवान शिकार से लौट रहे हैं।

'ये अवश्य मेरे पति के बेटे हैं,' उसने सोचा। उसने सोचा कि राजा उन्हें कितना ज़्यादा प्यार करता होगा, और उसका मन ईर्ष्या से जल-भुन गया। 'यह तो अच्छी बात है कि मेरा पति इस समय कहीं दूर है, क्योंकि मुझे अभी काफ़ी कुछ करना है,' उसने मन-ही-मन कहा।

वह आगे नहीं गयी, इसलिए कोरा उसे नहीं मिली। वह ऊँची मीनार पर अपने कक्ष में थी। जादुई धागे ने उसे वापस उसके महल पहुँचा दिया, और फिर अपने-आप को लपेट कर गोला बन गया।





डायन की बेटी ने अपने-आपको एक कमरे में बंद कर लिया। उसने सफ़ेद रेशम से छह कमीज़ें काटीं, फिर वह एक लम्बी-सी सुई से उन्हें सीने लगी। सुई रोशनी में चमक रही थी। सीते-सीते उसने मंत्र पढ़ा—छह बार, हर कमीज़ के लिए एक बार :

बर्फ़ जैसे सफ़ेद,
टाँके रेशम के,
यह है मेरा उपहार।
दिल चाहेगा, पर



शरीर जानेगा
कि दूध जैसे चिकने
ज़हरीले रेशम से
पंख कैसे उगते हैं।
घूमो और जलाओ,
घूमो और जलाओ।
हाथों और पैरों को पंख बना दो।

जब कमीज़ें तैयार हो गयीं तो डायन की बेटी ने दरवाज़ा खोला और जादुई धागे का गोला तलाश करने चली। जंगल के किनारे पर पहुँच कर उसने कहा, "तुम्हारा मालिक कल वापस आयेगा, लेकिन अभी तो तुम मेरे हो। आख़िरी बार, उन्हें ढूँढ़ दो।"

जादुई धागे का गोला पेड़ों के बीच लुढ़क गया,

और डायन की बेटी उस गुप्त महल में फिर आयी।

कोरा ने उसे अपने कक्ष की खिड़की से देखा, और तुरंत समझ गयी कि कुछ भयानक होनेवाला है। वह पर्दे के पीछे छिप गयी और बाहर अस्तबल के बाड़े में झाँका तो उसके भाई दिखायी दिये, जो दिन भर शिकार खेलने के बाद वापस आ गये थे।

"स्वागत है," सब से बड़े लड़के ने कहा, "हमारा घर और हम आपका सत्कार करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जैसा कि हम हर अजनबी के साथ करते हैं जो इस जंगल में भटक जाता है।"

"मैं भटकी नहीं हूँ," डायन की बेटी ने कहा, "मैं तुम्हारे पिता, राजा के पास से तुम्हारे लिए उपहार लायी हूँ। देखो, हर-एक के लिए सफ़ेद रेशम से बनी एक कमीज़ है।"

लड़कों ने कमीज़ें ले लीं। इससे पहले कि उनकी बहन उन्हें सावधान करती, उन्होंने कमीज़ों में अपनी बाँहें डाल दीं।

"देखना," डायन की बेटी ने कहा, "ये उनकी दूसरी चमड़ी की तरह हो जायेंगी।" वह मुड़ी और चली गयी। पेड़ों के बीच के अँधेरे ने उसे निगल लिया।

कोरा को लगा कि वह हिल-डुल भी नहीं सकती। वह खिड़की से नीचे देखती रही। सोच रही थी कि वह शायद ग़लती कर रही थी। शायद उसे अपने दिल में इस प्रकार डर और अनिष्ट नहीं भर लेना चाहिए। लेकिन उसके खूबसूरत भाइयों की गर्दनें लम्बी होती जा रही थीं और सिर सिकुड़ते जा रहे थे। उनकी बाँहें सफ़ेद हो गयी थीं और फड़फड़ा रही

थीं। देखते-ही-देखते मनुष्य होने की कोई निशानी उनमें नहीं बची। फड़फड़ाते पंखों का शोर हवा में भर गया, जब छह हंस हवा की लहर के साथ-साथ जंगल के परे डूबते सूरज की ओर उड़ गये।

"रुक जाओ!" कोरा ने पुकारा, "मेरी ख़ातिर रुक जाओ।" लेकिन वे आँखों से ओझल हो गये और वह अकेली रह गयी।



वे चले गये तो कोरा डर से ठंडी पड़ गयी। उसकी अपनी ही साँस कानों में सूँ-सूँ करती हवा जैसी तेज़ लग रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि

वह क्या करे? पिता के महल में वापस चली जाये या वहीं ठहरे—इस आशा से कि शायद वे उसे देख लें। अंत में उसने महल से चले जाने का फ़ैसला किया। कमरे में छाये सन्नाटे से उसे डर लग रहा था। अपने बेचारे भाइयों के लिए उसे रोना आ रहा था। लेकिन वह जानती थी कि उसे उनका पीछा करना होगा, वरना वे हमेशा के लिए खो जायेंगे। उसने एक टोकरी में रोटियाँ और पनीर भरा और गरम कोट लेकर जंगल की ओर चल पड़ी।

कोरा रात भर और अगले दिन चलती रही, चलती रही—पंजों जैसी घनी, मोटी कँटीली झाड़ियों और ज़मीन में धँसी पेड़ की टेढ़ी-मेढ़ी जड़ों के बीच। रास्ता दिखाने के लिए चाँद भी नहीं निकला था। रात के पक्षियों की आवाज़ से डर के मारे उसका खून

बढ़ाती रही। आख़िरकार सूरज निकला। लड़की ने चारों ओर देखा, पर कुछ पहचान नहीं सकी। वह आगे बढ़ती रही—आकाश में हंसों को ढूँढ़ती, उनके पंखों की आवाज़ सुनने को कान लगाये, एक पैर दूसरे से आगे रखती। फिर रात होने लगी। उसे सामने एक कुटिया दिखायी दी। थकान के कारण पैर आगे नहीं बढ़ रहे थे। पाँवों में दर्द भी हो रहा था।

'देखूँ,' कोरा ने सोचा, 'शायद कोई दयालु लकड़हारा कुछ घंटे यहाँ आराम करने दे।'

उसने कुटिया का दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा तो खुला पड़ा था। उसमें जो भी रहता था, जाने कब का चला गया था। कोने में पड़ी एक खाट पर वह लेट गयी और उसकी आँखें लग गयीं।



सोते हुए उसको सपना आया कि छह हंस उड़ कर खिड़की के अन्दर आ गये हैं और उसकी खटिया को घेर कर खड़े हैं।

कोरा चीख़ पड़ी, “तुम मेरे वही भाई क्यों नहीं हो जिन्हें मैं प्यार करती हूँ? वे कहाँ है? कहाँ हैं वे?”

एक आवाज़ आयी, “हम यहाँ हैं,” और कोरा को लगा कि आवाज़ उसके सिर के अन्दर से आ रही है। उसने तुरंत अपनी आँखें खोलीं। अवश्य वह

उसका भाई ही बोला था। तभी उसने उन सब को देखा। वे मनुष्य के शरीर में उसकी खाट के इर्द-गिर्द खड़े थे और उसकी ओर देख कर मुस्कुरा रहे थे।

"खुशी मनाने का समय नहीं है!" एक भाई ने कहा, "हमें हर शाम को केवल कुछ मिनटों के लिए ही मनुष्य के शरीर में वापस आने की इजाज़त है और इसके बाद फिर हंस बन जाते हैं।"

कोरा रो पड़ी। बोली, "क्या मैं कुछ नहीं कर सकती? मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। इस जादू को तोड़ने के लिए मैं कोई भी काम कर सकती हूँ।"

उसके सब से छोटे भाई ने कहा, "तुम्हें जो करना होगा वह बहुत मुश्किल है।"

"कुछ भी मुश्किल नहीं है। तुम बोलो तो सही," कोरा ने कहा।

‘‘तुम्हें बूटियों और नदी के नरकुलों से छह कमीज़ें बनानी होंगी। हममें से हर-एक के लिए एक कमीज़।’’

‘‘मैं करूँगी,’’ कोरा ने कहा, ‘‘मैं झीलों और नदियों के किनारे घूमूँगी और यह काम करूँगी। समय लगेगा, लेकिन तुम सब फिर मनुष्य बन जाओगे।’’

‘‘लेकिन जब तक कमीज़ें बन कर हमारे शरीर पर न आ जायें, तुम न तो कोई आवाज़ निकालोगी और न ही किसी से एक शब्द बोलोगी। वरना यह जादू ज़िंदगी भर नहीं टूटेगा।’’

‘‘कोई आवाज़ नहीं?’’ कोरा को लगा कि उसका दिल पत्थर की एक गाँठ बन गया है।

भाई ने जवाब दिया, ‘‘नहीं, किसी क़िस्म की

आवाज़ नहीं—हल्की भी नहीं। वरना हम ज़िंदगी भर हंस बने रहेंगे।''

''बहुत मुश्किल है, पर मैं ज़रूर ही ऐसा करूँगी,'' कोरा ने कहा।

वे कुटिया के दरवाज़े तक गये। सूरज की आख़िरी किरणें खिड़की से भीतर आ रही थीं। फिर आया बर्फ़ जैसा सफ़ेद पंखों का तूफ़ान। कोरा ने देखा कि हंस शाम के धुँधलके में ऊपर उठ गये हैं। जैसे-जैसे उनके पंख उन्हें ऊपर ले जाते गये वे आँखों से दूर होते गये और छोटे-छोटे नज़र आने लगे।



कोरा ने अपना काम अगले दिन सवेरे ही शुरू कर दिया। अगले कई हफ़्तों तक वह नदियों और झीलों के किनारे बूटियाँ और नरकुल ढूँढ़ती रही। कमीज़ें उसे बुननी हैं, यह ध्यान में रखते हुए उसने मोटे-मोटे नरकुल जमा किये। बारिश उसे भिगोती रही, सूरज उसे जलाता रहा। उसने पेड़ों के नीचे और गुफाओं में शरण ली। जो शब्द वह बोल नहीं सकती थी, वह उसके मन में गूँजते रहे और एक गीत-सा बन गया जो वह अपने मन में गुनगुनाती रही—मुँह से एक आवाज़ भी निकाले बिनाः

नदियों के नरकुलों और बूटियों को
काटो, सुखाओ, बुनो और सिओ।
मोड़ो, सिओ, खींचो, गाँठ लगाओ।

सफ़ेद मौन मेरे मन में छाया रहे
मैं जड़ें, पौधे, टहनियाँ चुनूँ,
न हँसूँ, न बोलूँ।
मोमबत्ती की रोशनी में, सारा दिन, सारी रात
सीती जाऊँ, सीती जाऊँ।
जब तक कि मेरे भाई आज़ाद नहीं हो जाते
मैं मूर्ति की तरह चुप रहकर
कमीज़ें तैयार न कर लूँ।

हफ़्ते, महीने बीत गये। सिलाई का काम मुश्किल था। बहुत धीरे-धीरे चल रहा था। तेज़ नुकीली घासों से काम करने के कारण शुरू-शुरू में कोरा की उँगलियों से खून बहने लगा। फिर तो वह उसकी आदी हो गयी। साल के अंत में जब बर्फ़ गिरने लगी

तो उसने एक कमीज़ पूरी की। सावधानी से तह बनकर, उसने उसे अपनी टोकरी में रख लिया।



एक दिन, जब कोरा एक पेड़ की सब से निचली डाल पर बैठी थी, एक बढ़िया सफ़ेद घोड़े पर सवार एक राजकुमार उधर से निकला। उसके दरबारी उसके साथ थे।

"देखिये, राजकुमार!" एक ने कहा, "पेड़ पर एक लड़की है। हम उसे नीचे उतार दें क्या?"

"तुम छोड़ो, मैं उससे बात करूँगा," राजकुमार ने कहा, "और नम्रता से कहूँगा कि वह नीचे उतरे।"

उसके कहने पर कोरा नीचे उतर आयी लेकिन उसके सवालों के जवाब में वह एक शब्द भी नहीं बोली।

"वह बोल नहीं सकती। गूँगी है," राजकुमार ने अपने दरबारियों से कहा।

फिर उसने कोरा से कहा, "मैं तुम्हें अपने महल ले जाऊँगा। वहाँ तुम बढ़िया-से-बढ़िया कपड़े पहनोगी। तुम्हारी गोरी गर्दन में चाँदी के हार पहनाऊँगा, क्योंकि तुम्हीं मेरी दुल्हन हो जिसकी मुझे तलाश थी।"

वह राजकुमार के साथ चली गयी। उसने उससे शादी कर ली और महल में सुख से रहने लगी। पर उसने अब भी अपने मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकाली। वह नदी-नालों के किनारे नरकुलों की तलाश में घूमती रही।

दिन में कोरा अपने करघे पर काम करती और रात को अपने पति के साथ नरम बिस्तर पर सोती थी। वह उससे प्रेम करने लगी थी। वह बहुत सुखी होती अगर बूढ़ी रानी-माँ उसकी सास न होती। वह हमेशा सास को अपने पास ही महसूस करती, जैसे कमरे के किसी कोने के जाले में काली मकड़ी लटक रही हो। बूढ़ी रानी की नफ़रत बहुत ठंडी हवा की तरह कोरा को छू जाती। रानी ने राजकुमार से कहा, ‘‘तुम मूर्ख हो। कोरा गूँगी नहीं है। वह दुष्ट जादूगरनी है। देखो, उसकी आँखें कैसे फैल जाती हैं! वह जानती है कि मुझे पता चल गया है कि वह रहस्यों से भरी है—वह जो दिखती है वह नहीं है।’’

‘‘तुम चुप रहो, माँ!’’ राजकुमार ने जवाब दिया, ‘‘अब यदि एक भी बुरा शब्द उसके लिए कहा तो

तुम्हे यहाँ से निकाल दूँगा।''

बूढ़ी रानी ने राजकुमार के सामने कुछ कहना छोड़ दिया। लेकिन जब कोरा अकेली होती तो रानी उसे जली-कटी सुनाती।



महीनों बीत गये। कोरा ने बुनाई जारी रखी, और जल्दी ही दो कमीज़ें तैयार हो गयीं। उसने सावधानी से उनको तह किया ताकि कँटीली टहनियाँ टूट न जायें, और उन्हें देवदार के एक बक्से में रख दिया। उसके बाद वह एक और कमीज़ बनाने में लग गयी।

कुछ समय बाद उसका पहला बच्चा पैदा हुआ। बच्चे को जन्म देने की पीड़ा उसने चुपचाप सही। मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकाली। लेकिन पीड़ा सह कर उसे खुशी हुई, क्योंकि वह जानती थी कि जल्दी ही उसका अपना बच्चा उसकी गोद में खेलेगा।

बच्चे का जन्म होते ही रानी-माँ बिस्तर के पास आ खड़ी हुई। उसने बच्चे को उठा लिया।

''मैं इसे नहला कर तुम्हें दे दूँगी,'' उसने कोरा से कहा।

कोरा सो गयी। वह उठी तो उसकी गोद ख़ाली थी। उसने झूले में देखा। वह भी ख़ाली था। राजकुमार और उसकी माँ उसके पंलग के पास खड़े थे। राजकुमार फूट-फूट कर रो रहा था।

चीख़ कर बूढ़ी रानी ने कहा, ''यह अपने बच्चे

को खा गयी। इसका मुँह देखो। खून लगा हुआ है। इसे जंगल में ले जाकर भेड़ियों के आगे फेंक दो।"

कोरा ने इनकार में ज़ोर-ज़ोर से सिर हिलाया, बिस्तर से नीचे कूद पड़ी, राजकुमार के पैर पकड़ लिये, लेकिन बोली नहीं।

"नहीं, मुझे विश्वास है कि तुमने ऐसा नहीं किया होगा," राजकुमार ने उसे उठाते हुए कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम बेकसूर हो। और तुम माँ, ऐसे ज़हरीले शब्द फिर कभी मत बोलना। वरना मैं तुम्हें कहीं दूर भेज दूँगा।"

कोरा रोती रही। पागल की तरह महल के लम्बे-लम्बे गलियारों के चक्कर लगाती रही। हर पर्दे के पीछे झाँकती, और हर आवाज़ को ध्यान से सुनती कि शायद कहीं किसी बच्चे का रोना सुनायी



पड़े। बूढ़ी रानी उसे देख रही थी। उसी ने कोरा के मुँह पर भेड़ का खून मल दिया था। उसने बच्चे को चुरा कर बहुत दूर भेज दिया था। वहाँ पहाड़ के उस पार, एक नौकरानी उसकी देखभाल करती थी। लेकिन महल में किसी को यह रहस्य मालूम नहीं था।



दो वर्ष बीत गये। कोरा नरकुलों से कमीज़ें बनाती रही। तीन तह की हुई कमीज़ें देवदार के बक्से में रखी थीं। अपनी शादी के तीसरे वर्ष, बसंत में वह फिर गर्भवती हुई। ज्यों-ज्यों उसके पेट में बच्चा बढ़

रहा था, बूढ़ी रानी की निगाहें उस पर टिकी थीं। कोरा को लगता था कि वह जहाँ भी जाती है, कोई शैतान उसके पीछे लगा रहता है।

जब कोरा का दूसरा बच्चा पैदा हुआ, बूढ़ी रानी उससे दूर रही। उसने नौकरानियों को अपनी बहू की देखभाल करने दी। बच्चे के जन्म के बाद एक नौकरानी ने कोरा को एक गिलास ठंडा पानी दिया। वह बूढ़ी रानी की वफ़ादार नौकरानी थी, उसका हुक्म बजानेवाली। उसने पानी में नींद की दवा मिला दी थी। पीते ही कोरा को गहरी नींद आ गयी।

कोरा की नींद खुली तो बच्चा ग़ायब था। उसके मुँह के कोनों पर खून जम कर सूख गया था। एक बार फिर बूढ़ी रानी ने चीख़-चीख़ कर कोरा पर आरोप लगाया। कोरा पहले की तरह चुपचाप पड़ी

रही। उसने अपना मुँह दीवार की ओर कर लिया। पलंग के पायताने खड़ा राजकुमार रो रहा था। उसने फिर अपनी माँ की बातों पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। कोरा फिर पागल-सी हो गयी। रोती, और महल के अँधेरे गलियारों के चक्कर लगाती रही।



पाँच वर्षों के बाद, पाँच कमीज़ें तैयार हो गयी थीं। वे सावधानी से तह करके देवदार के बक्से में रखी थीं। कोरा उस दिन की कल्पना करती थी जब उसके भाइयों पर किया गया जादू टूट जायेगा, हमेशा के

लिए। उसको पता चला कि वह फिर गर्भवती है। उसका दिल डर से भर गया। अभी भी उसने नदी की सूखी घास की बुनाई नहीं छोड़ी। रात-दिन उसमें लगी रहती।

जिस दिन उसका तीसरा बच्चा पैदा हुआ, छठी कमीज़ भी बन कर तैयार हो गयी। सिर्फ़ बायाँ आस्तीन रह गया था। कोरा ने सोचा था कि अपने बच्चे को जन्म देने के बाद इसे पूरा कर दूँगी।



बच्चा पैदा होने के बाद इस बार भी वही सब-कुछ फिर हुआ जो पहले दो बार हो चुका था। इस बार

राजकुमार को अपनी माँ का विश्वास करना पड़ा। उसने कोरा को मौत की सज़ा सुना दी। "उसे जिंदा जला दिया जाये," उसने रोते-रोते ही हुक्म दिया। उस ज़माने में डायनों को यही सज़ा दी जाती थी।

जब कोरा को जलाने का समय पास आया, कोरा अपने सोने के कमरे में देवदार के बक्से के पास गयी। उसने अपनी बनायी नरकुलों की कमीज़ों को निकाला। चिता की ओर जाते हुए वह उन्हें अपने साथ ले गयी। उसके हाथों में उन विचित्र पोशाकों को देख कर सब को आश्चर्य हुआ। कोरा सिर्फ़ अपने भाइयों के बारे में सोच रही थी। उसने आँखें बन्द कर के किसी चमत्कार होने के लिए प्रार्थना की।

तभी अचानक हवा में फड़फड़ाते पंखों की आवाज़ भर गयी। लोगों ने सिर उठा कर देखा कि छह हंस उनके सिर के ऊपर उड़ रहे थे। धीरे-धीरे वे नीचे उतरे—वहीं, जहाँ कोरा खड़ी थी। उन्होंने अपने पंखों से उसे घेर लिया। कोरा ने एक कमीज़ ले कर पहले हंस को पहनायी। ऐसा करते ही हंस की गर्दन छोटी होने लगी और सिर बड़ा होने लगा। और, शीघ्र ही उसके सामने एक नौजवान खड़ा हो गया। उसने अपनी बनायी बाक़ी कमीज़ों के साथ भी वैसा ही किया और उसके सामने उसके छह प्यारे भाई खड़े हो गये। सब से छोटे भाई के बायें हाथ की जगह हंस का एक पंख था, क्योंकि कोरा आख़िरी कमीज़ की बायीं बाँह को पूरा नहीं कर पायी थी। खुशी से कोरा रो पड़ी। उसके भाई मनुष्य का शरीर फिर से

पाकर खुशी से झूम उठे। उन्होंने कोरा को गले लगाया, प्यार किया। ''तुमने हमें बचा लिया, बहन! तुमने अपने मौन से हमें बचा लिया, और अब तुम्हारा ही जीवन ख़तरे में है। अब चुप मत रहो। अपने पति को सब-कुछ बता दो।''

कोरा ने कहा, ''मेरे प्यारे भाइयो, तुमको दोबारा देखकर मेरा दिल खुशी से झूम रहा है। और मेरे प्रिय पति! आपको भी सच्चाई मालूम होनी चाहिए। पहले मैं बोलकर नहीं बता सकती थी।''

बूढ़ी रानी की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, ''तुम मेरे बच्चों को मुझसे दूर ले गयीं और उनकी हत्या कर दी। तुम दुष्ट औरत हो।''

''नहीं, नहीं,'' बूढ़ी रानी चिल्लायी, ''मैं अपने ही पोतों को कैसे मार सकती हूँ? वे ज़िन्दा है।''

"हो सकता है, तुमने उन्हें न मारा हो, माँ!" राजकुमार ने दुखी स्वर में कहा, "लेकिन तुम यहाँ खड़ी-खड़ी मेरी पत्नी को मरते देखना चाहती थीं। उसकी बजाय तुम्हें सज़ा मिलेगी।"



बूढ़ी रानी को चिता में जला दिया गया। कोरा के बच्चों को महल में वापस लाया गया। वे अनेक वर्षों तक सुख से रहे। वे बार-बार छह हंसों की कहानी सुनते थे। वे जानते थे कि कहानी सच्ची है, क्योंकि

उनके सब से छोटे मामा के बायें हाथ की जगह अभी तक हंस का पंख था, जो उनके कोट के नीचे छिपा रहता था।



चित्रांकन
इयान बेक

एक समय की बात है...
एक राजकुमारी थी जिसने अपने
छह भाइयों को हंसों में
बदलते हुए देखा है।
क्या वह उन्हें वापस ला पाएगी?

